

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ

پूछा, कि क्या मुझिम है तुम लोगोकी औ कसिदो ? (उ१) सभने जवाब दिया, कि “उम भेजे गये हें

قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٦٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارَةً مِّنْ طِينٍ ﴿٦٣﴾ مَسْوَمَةٌ

जराथम पेशा लोगोकी तरफ (उ२) ताकि छोडें उन पर मिट्टीके बने पत्थर (उ३) निशान दिये हूअे

عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٦٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مَن

आपके रबके यहाँ, उदसे बढ जानेवालोके लिये (उ४) तो निकाल लिये उमने जो थे उसमें

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٦٦﴾

ईमानवाले (उ५) तो न पाया उमने उसमें अक घरके सिवा, कोई मुसलमान (उ६)

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَكْفُرُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٦٧﴾ وَفِي

और रभ छोडी उमने उसमें निशानी उनके लिये, जो उरें दुखवाले अजाबको (उ७) और

مُوسَىٰ إِذْ أُرْسِلْتَهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٦٨﴾ فَتَوَلَّىٰ

मूसामें भी, जबकि भेजा था उमने उन्हें फिरओनकी तरफ, रौशन सनदके साथ (उ८) तो वोड फिर गया

بِرُكْنِهِ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٦٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَاهُ فَغَدَقْنَاهُم

भअ अपने अरकानके, और बोला कि जादूगर है या पागल है (उ९) तो पकडा उमने उसे, और उसके लश्करोकी, तो जोक दिया उन्हें

فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٧٠﴾ وَفِي عَادٍ إِذْ أُرْسِلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ

दरियामें, और वोड अपनी मलामत कर रहा था (उ१०) और आदमें भी, जबकि छोड दी उमने उन पर बेबरकत

الْعَقِيمَ ﴿٧١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرَّهْيَبِ ﴿٧٢﴾

आंधी (उ११) नही छोडती कुछ जिस पर गुजरी, मगर कर दिया उसे जैसे गली सडी (उ१२)

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَسْعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٧٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ

और थमूदमें भी, जबकि कडा गया उन्हें, कि रेड सेड लो अक वक्त तक (उ१३) तो सरकशीकी अपने

رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصُّعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٧٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا

रबके हुकमसे, तो पकडा उन्हें भास कडकने, और वोड देभ रहे हें (उ१४) तो न सकत थी उन्हें

مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٧٥﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِذْ

भडे छोनेकी, और न थे बढला ले सकने वाले (उ१५) और नूडकी कौम पडलेसे. भिलाशुबल वोड

كَأَنَّهُمْ قَوْمًا فَسِقِينَ ۗ وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

थे नाफरमान लोग (४६) और आस्मानको बनाया हमने हाथोंसे, और बेशक हम उसको वसीअ करनेवाले हैं (४७)

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهَدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا

और जमीनको बिछाया हमने, तो कितना अच्छा हम बिछानेवाले हैं (४८) और हर चीजसे पैदा करमाया हमने

رُوحَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفَرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ

दो ज़ोदे, कि तुम लोग ध्यान करो (४९) तो भाग यवो अट्टाहकी तरफ़. बेशक मैं तुम्हें उससे भुला भुला

نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ

उरानेवाला हूँ (५०) और मत बनाओ अट्टाहके साथ दूसरा मा'बूद. बेशक मैं तुम्हारे लिये उससे

مُّبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا

साफ़ साफ़ उरानेवाला हूँ (५१) इसी तरह न आया उनके पास जो पड़ले थे कोठ रसूल, मगर वोड

قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجُنُّونٌ ﴿٥٢﴾ أَكُوا صَوَابَهُمْ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَآغُوتٌ ﴿٥٣﴾

कहा किये कि जादूगर है या पागल है (५२) क्या वोड अेक दूसरेको उसकी वसियत करके मरा किये? बल्कि वोड लोग सरकश हैं (५३)

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾ وَذَكَرْنَاكَ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ

तो मुंड करे वो उनसे, कि तुम पर कोठ ईल्जाम नहीं (५४) और समजाते बुजाते रहो, क्यूंकि बिलाशुभड समजाना काम आता है

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

ईमानवालोंके (५५) और नहीं पैदा करमाया मैंने जिन और ईन्सानको, मगर ताकि पूजें मुजे (५६)

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونَ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ

मैं न मांगू उनसे कोठ रोजी, और न याहूँ कि भाना दें मुजे (५७) बेशक अट्टाह ही

هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ السَّتِيبِ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا

रोजी देनेवाला, कुव्वतवाला, कुदरतवाला है (५८) तो बिलाशुभड जिन्होंने अंधेर मयाया है, उनके लिये

مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ

अेक भारी है, जैसे उनके अगले साथियोंकी भारी थी, तो जल्दी न मयाअें (५९) तो डलाकी है उनकी जिन्होंने

كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

कुड़ किया उनके उस दिनकी, जिसका वा'दा दिये जाते हैं (६०)

سُورَةُ الطُّورِ ۵۲
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سूरअ तूर मअककय्या

नामसे अल्लाहके बडा मडरबान बभशनेवाला

आयात ४८ रुकूअ २

وَالطُّورِ ۱ وَكَيْتِبَ قَسَطُورٍ ۲ فِي رَقٍ قَسُورٍ ۳ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۴

कसम है तूरकी (१) और उस नविशतेकी (२) जो फुले दफतरमें है (३) और बैतुल मा'मूरकी (४)

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۵ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۶ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ

और उस उँची छतकी (५) और लडकाओे डूअे समुन्दरकी (६) कि बिलाशुबह तुम्हारे रबका अजाब यकीनन

لَوَاقِعٌ ۷ مَا لَكَ مِنْ دَافِعٍ ۸ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۹ وَتَسِيرُ

होनेवाला है (७) नही है उसका कोँ टालनेवाला (८) जिस दिन कि धूमते किरेंगे आस्मान छिल छिल कर (९) और यवेंगे

الْجِبَالُ سَيْرًا ۱० فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۱१ الَّذِينَ هُمْ فِي

पडाड उड उड कर (१०) तो डवाकी है उस दिन जुटवानेवालोंके विये (११) जो बेडूदगीमें

خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۱२ يَوْمَ يُدْعُونَ إِلَى تَارِجِهِمْ دَعْوًا ۱३ هَذِهِ

पडे भेल रहे हैं ..(१२).. जिस दिन कि धकेले जाअेंगे जडनमकी आगकी तरफ, धक्का देकर (१३) कि यह है

النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۱४ أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا

वोड आग ! जिसको जुटलाया करते थे तुम (१४) तो क्या यह जादू है ? या तुम लोग नजरबन्दी

تُبْصِرُونَ ۱५ أَصَلُّوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ

में पडे हो ? (१५) जाओ उसमें भ्वाड सध्र करो या न करो. यकसां है तुम्हें.

إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۱६ إِنَّ السَّقِيْنَ فِي جَنَّتٍ وَ

उसीका बढला दिये जाते हो जो किया करते थे (१६) भेशक अल्लाहसे डरनेवाले, बागों और

نَعِيمٍ ۱७ فَكِهِينَ بِسَاءِ أْتَهُمْ رَبُّهُمْ ۱८ وَوَقَّهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ

आराममें हैं (१७) भुश भुश जो दे रभा है उन्हें उनके रबने. और बया लिया उन्हें उनके रबने, अजाबे

الْجَحِيْمِ ۱९ كُلُّوْا وَأَشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۲० مُتَّكِيْنَ

जडनमसे (१८) कि जाओ और पियो मजेसे, बसबब उसके जो अमल किया करते थे (१९) तकिया दगाओे अपने

عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۲० وَرَوَّجْتَهُمْ بَحُورِ عَيْنٍ ۲१ وَالَّذِينَ آمَنُوا

अपने तप्तों पर, बराबर बिछाओे डूओे. और बियाड दिया डमने उन्हें बडी बडी आंभवाली गोरियोंसे (२०) और जो ईमान लाओे

وقف الان

وَاتَّبَعْتَهُمْ ذُرِّيَّتَهُمْ بِإِيمَانٍ الْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ

और पीछे पीछे रही उनके उनकी नस्ल धमानके साथ, तो मिला दिया हमने उनके साथ उनकी नस्लको, और नहीं कभीकी हम

عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۗ وَآمَدَدْنَاهُمْ

ने उनके उनके आ'मालसे कुछ. हर नाकसने जो कमाई की उसमें पकडा हुआ है (२१) और मदद करमाई हम

بِقَاكِهِمْ وَوَحْيٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۗ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَعْنُ فِيهَا

ने उन जनतियोंकी मेवा और गोशतसे, जो यारहें (२२) छीन जपटकी तफरीह किया करेंगे उसमें जामकी, जिसमें न

وَلَا تَأْتِيهِمْ ۗ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ۗ

बेहुदगी है, और न जर्मकारी (२३) और दौरा करेंगे उन पर उनके गुलाम, गोया कि वोह मोती हैं मडकूज (२४)

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۗ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي

और सामने आये अक दूसरेके पूछगछ करते (२५) केडने लगे, कि "बिलाशुबल हम थे पडले

أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۗ فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَدْنَا عَذَابَ السَّوْمِ ۗ

अपने लोगोंमें डरते हुए (२६) फिर ओहसान इरमाया अल्लाहने हम पर, और भया लिया हमें गर्म लवाके अजाबसे (२७)

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۗ فَذَكَّرْنَا آتَتْ

बिलाशुबल हम थे पडलेसे कि दुहाई देते थे उसकी, भेशक वोह बडा ओहसान इरमानेवाला रहमवाला है" (२८) तो नसीहत करते रहो,

بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا فَجْوَانَ ۗ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرْتِصُ

कि नहीं हो तुम अपने रबके इज्जसे काहिन और न मजनू (२९) क्या यह लोग केडते हैं कि अक शाहर है, हम टैप रहे

بِهِ رَبِّبَ السَّنُونِ ۗ قُلْ تَرْتَبُّوا قَائِي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَرِبِينَ ۗ

हैं उनके लिये भी लवाहिसे जमानाको (३०) केह दो कि टैपते रहो, कि बिलाशुबल मैं भी टैपनेवालोंसे हूँ (३१)

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاعُونَ ۗ أَمْ يَقُولُونَ

क्या बताती है उन्हें उनकी अकलें यह ? या वोह सरकश लोग हैं (३२) आया यह केडते हैं कि

تَقْوَاهُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۗ فَلْيَأْوَ بِحَدِيثِ مَثَلَةٍ إِنْ كَانُوا

भुट छी बना लिया है एस कुरआनको, बल्कि वोही बेईमान हैं (३३) अथवा तो ले आये अक बात भी उसके मिल्, अगर वोह

صَادِقِينَ ۗ أَمْ خَلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۗ أَمْ

सच्चे हैं (३४) आया वोह पैदा किये गये हैं बेकिसीके ? या वोही भुटको पैदा करनेवाले हैं ? (३५) क्या

خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَّا يُوقِنُونَ ﴿۳۱﴾ أَمْرٌ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ

उन्होंने पैदा किया है आस्मानों और जमीनको ? बल्कि भयंकर लोग हैं (३१) क्या उनकी पास हैं तुम्हारे

رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضْطَرُّونَ ﴿۳۲﴾ أَمْ لَهُمْ سُلْمٌ يَسْتَبْعُونَ فِيهِ

रबके भजने ? क्या यही आजाद दरोगा हैं (३२) या उनका है कोई जीना आस्मानका, कि सुन आते हैं जिससे

فَلَيَاتٍ مُّسْتَبْعُهُمْ بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿۳۳﴾ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ

तो फिर लाये उनका सुननेवाला कोई भुली सनद (३३) क्या उस अल्लाहके लिये बेटियां और तुम्हारे अपने

الْبَنُونَ ﴿۳۴﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا وَهُمْ مِّنْ مَّعْرُومٍ مُّثْقَلُونَ ﴿۳۵﴾ أَمْ

लिये भेटे ? (३४) क्या तुम मांगते हो उनसे कोई उजरत, तो वोह तावानसे भोजल हैं (३५) या उन

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿۳۶﴾ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا أَفَالَّذِينَ

के पास गैब है, तो वोह जनमपत्र कलमबन्द करते रहते हैं (३६) या वोह चाहते हैं यालबाजी, तो जिन्होंने

كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿۳۷﴾ أَمْ لَهُمُ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا

कुड़ किया वोही दांवके मारे हैं (३७) क्या उनका कोई मा'बूद है अल्लाहके सिवा ? पाकी है अल्लाहकी उससे जो

يُشْرِكُونَ ﴿۳۸﴾ وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ

शिक करते हैं (३८) और अगर देभ ही बें कोई टुकड़ा आस्मानसे गिरता हुवा, तो भी कहेंगे कि बादल है

مَّرْكُومٍ ﴿۳۹﴾ فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿۴۰﴾

नीचे ठीपर (३९) तो छोड़ो उन्हें यहाँ तक कि मिलें अपने उस दिनसे, जिसमें बेहोश किये जायेंगे (४०)

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿۴۱﴾ وَإِنَّ

वोह दिन कि न काम आये उनके उनकी यालबाजी कुछ, और न वोह मदद किये जायेंगे (४१) और बेशक उनके

لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۴۲﴾

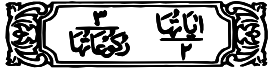
लिये जिन्होंने अंधेर मया रभा है अक अजाब है, उस अजाबे आभिरतसे र्धर ही, लेकिन उनके बोहतरोको र्धम नहीं (४२)

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ

और जमे रहो अपने रबके हुकमके लिये, क्यूंकि तुम हमारी आंभोंकी निगरानीमें हो, और पाकी भोलते रहो अपने रबकी उम्दके

تَقُومُ ﴿۴۳﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿۴۴﴾

साथ, जब तुम उठ पडे हो (४३) और कुछ रातको भी पाकी भोलते रहो उसकी, और तारोंके पीठ देते वक्त (४४)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



سूरअे नज्म मकिकथ्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ६२ रुकूअ ३

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝۱ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝۲ وَمَا يَنْطِقُ

कसम हे नज्मकी, जबकि नीचे उतरे (१) कि न बडका तुम्हारे साथ रहनेवाला मालिक, और न भटका (२) और नहीं बोलते

عَنِ الْهَوَىٰ ۝۳ إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝۴ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝۵

अपने जोसे (३) उनकी दर बात वहीये धलाही ही है, जो की जाती है (४) सिपाया उसको सप्त कुवतों वाले (५)

ذُو مِرَّةٍ ۝۶ فَاسْتَوَىٰ ۝۷ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝۸ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝۹

ताकतवरने, फिर मुतवज्जेड हुवा (६) और वोड आस्मानके उंचे कनारे पर थे (७) फिर करीब हुवा, फिर और उतर आया (८)

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝۱۰ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝۱१

तो रह गया दो कमानोंका फासला, बल्कि उससे भी कम (९) तो वहीकी अपने बन्दोंको जो वहीकी (१०)

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝۱२ أَفَتَسْرُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝۱३ وَلَقَدْ رَآهُ

दिलने जूट न कडा, जो कुछ आंभोंने देखा (११) तो क्या तुम लोग जगडते हो उनसे उनकी यश्मदीद पर (१२) और बेशक देखा

نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝۱४ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۝۱५ عِنْدَ هَاجِئَةِ الْمَأْوَىٰ ۝۱६

उसे उन्हींने दोबार (१३) सिद्दरतुल मुन्तहाके पास (१४) उसीके पास जन्नतुल मा'वा है (१५)

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۝۱७ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۝۱८ لَقَدْ

जब कि छाये है सिद्दराकी, जो छाये है (१६) न फिरी आंभ, और न उदसे बाहर गरी (१७) बेशक

رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۝۱९ أَقْرَأَيْتُمُ اللَّتَّ وَالْعَرَّىٰ ۝२०

देखा अपने रबकी निहायत बडी बडी निशानयां (१८) तो क्या तुम लोगोंने देखा है लात और उजूआ (१९) और

مَنْوَةٌ ثَالِثَةٌ الْاُخْرَىٰ ۝२१ اَلْكُمُ الدَّكْرُ وَكَهْ اَلْاُنْتَىٰ ۝२२ تِلْكَ اِذَا

उद्दा तीसरी मनातकी (२०) क्या तुम्हारे दिये भेटा और उस अल्लाहके दिये भेटी (२१) यह तो फिर

قَسَمٌ صِدْقَىٰ ۝२३ اِنَّ هِيَ اِلَّا اَسْمَاءٌ سَبَّيْتُسُوْهَا اَنْتُمْ وَاَبَاؤُكُمْ

भेदंगी तकसीम है (२२) नहीं है वोड, मगर यन्द नाम, कि रभ लिया जिसे तुमने, और तुम्हारे बाप

مَا اَنْزَلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ يَتَّبِعُونَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا هُوَ

दादोंने, नहीं नाजिल करमाया अल्लाहने उसकी कोरि सनद. नहीं यलते यह लोग मगर अपने भयाल पर, और जिसकी

الْأَنْفُسُ ۗ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ الْهُدَىٰ ۗ ﴿٣٦﴾ أَمْ لِيَلسَانٍ مَا

उनका जो था। हालांकि यकीनन आ युकी उनके पास उनके रबकी तरफसे छिदायत (२३) क्या हर आदमीके लिये वोही हो जाये जिसकी

تَسْتَأْذِنُ ۗ فَبِئْسَ الْاٰخِرَةُ وَالْاٰوَلٰى ۗ ﴿٣٧﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلٰكٍ فِي السَّمٰوٰتِ

उसने आरजूकी (२४) तो अल्लाह हीकी है आभिरत और दुन्या (२५) और कितने इरिशते हैं आस्मानोंमें,

لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا اِلَّا مِّنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاٰذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ

कि न काम आयेगी उनकी सिफारिश कुछ, मगर उसके बाद कि इजाजत दे दे अल्लाह जिसे चाहे

وَيَرْضٰى ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيْسُوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ

और पसन्द करमाये (२६) भेशक जो नहीं मानते आभिरतको, यकीनन नाम रभते हैं इरिशतोंका

تَسْبِيَةَ الْاٰنۢبِيَآءِ ۗ وَقَالَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّعْلَمُوْا اِنَّ يَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ

औरतों जैसा नाम (२७) और नहीं है उन्हें उसका कुछ भी इल्म. नहीं चलते मगर भयाव पर.

وَ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۗ فَاَعْرَضَ عَنْ قَوْمِ

और भेशक वहम व गुमान नहीं काम आता उकके बजाये कुछ (२८) तो रुभ कर लो उससे

تَوَلٰٓىۥ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۗ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ

जो फिर गया, हमारी यादसे, और न चाहा मगर दुन्यावी जिन्दगी (२९) यही पछोच है उनके

مِّنَ الْعِلْمِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِۦٓ ۗ وَهُوَ

इल्मकी. भेशक तुम्हारा रब ही भुभ जानता है, जो बहका उसकी राहसे. और वोह

اَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدٰى ۗ وَبِاللّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ

भुभ जानता है जिसने राह पाई (३०) और अल्लाह हीका है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ जमीनमें है.

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا

ताकि बहला दे उन्हें जिन्होंने बुराईकी उसका जो उन्होंने किया, और पचाव दे उन्हें जिन्होंने नेकीकी

بِالْحَسَنٰى ۗ ﴿٣٨﴾ الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبِيْرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشِ اِلَّا اللّٰهَ

अच्छा (३१) जो भया करते हैं कभीरा गुनाहोंसे और बहयाईयोंसे, मगर मा'भूली भूल यूक पर रुक जाना.

اِنَّ رَبَّكَ وَاَسْعُرُ الْمَغْفِرَةِ ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذَا اُنْتَابْتُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

भेशक तुम्हारा रब वसीअ मज्फिरतवाला है. वोह भुभ जानता है तुम लोगोंको, कि जब तुम्हें पैदा करमाया मिट्टीसे,

وَإِذْ أَنْتُمْ آجِنَةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ

और जब तुम डमलकी सूत थे अपनी अपनी मांके पेटोंमें. तो मत पाकीजा करार दो भुद अपनेकी. वोह भुब जानता है जो

بِسْمِ النَّفِيِّ ۖ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تُوَلَّى ۖ وَأَعْطَى قَلِيلًا ۖ وَالَّذِي ۖ

उससे दरा (उ२) क्या तुमने देभा उसे जो फिर गया (उ३) और कुछ दिया और बन्द कर दिया (उ४)

أَعْنَدَهُ ۖ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يُرَى ۖ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ

क्या उसके पास गैबका एल्म है, तो वोह देभता रहता है (उ५) क्या नहीं बाभबर किया गया जो

مُوسَىٰ ۖ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى ۖ ۗ أَلَا تَذَكَّرُ ۚ وَأَزْرَأَةً ۖ وَزُرَّاءَ أُخْرَىٰ ۖ

भूसा (उ६) व एब्राहीमके सलीकोंमें है, जिन्होंने पूरी वफादारीकी (उ७) यह कि नहीं उठाती कोरि भोजल जान दूसरेके भोजको (उ८)

وَأَنَّ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۖ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۖ

और यह कि नहीं है एन्सानके लिये मगर यही कि कोशिश कर दी (उ९) और यह कि उसकी कोशिश जल्द ही देभी जायेगी (४०)

ثُمَّ يُجْزَأُ الْجَزَاءَ الْآوْفَىٰ ۖ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۖ وَأَنَّ هُوَ

फिर भदवा दिया जायेगा उसका पूरा पूरा (४१) और बेशक तुम्हारे रबकी तरफ आभिरी मन्जिल है (४२) और बेशक उसी

أَفْهَكَ وَأَبْكَى ۖ وَأَنَّ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ۖ وَأَنَّ خَلْقَ الرَّوْحَيْنِ الذَّكَرِ

ने डंसाया और रुलाया (४३) और बेशक उसीने मारा और जिलाया (४४) और बेशक उसीने पैदा इरमाया जोडा, नर

وَالْأُنثَىٰ ۖ مِنْ تُطْفَأِ إِذَا سُنِيَ ۖ وَأَنَّ عَلَيْكَ الشَّأَةَ الْاُخْرَىٰ ۖ

और मादा (४५) नुत्फैसे, जब डावा जाये (४६) और बेशक उस पर है आभरी उठाना (४७)

وَأَنَّ هُوَ أَعْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۖ وَأَنَّ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ ۖ وَأَنَّ أَهْلَكَ

और बेशक उसने मावदार व गनी किया (४८) और बेशक वोही शिअरा नामके सितारेका भी रब है (४९) और बेशक उसने भरबाद

عَادَ الْأُولَىٰ ۖ وَتَنُودًا فَمَا أَبْقَىٰ ۖ وَقَوْمٌ نُورٌ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا

कर दिया आद नामकी पहली क्रोमको (५०) और घमूह, तो न भाकी छोडा (५१) और नूडकी क्रोमको उनसे पहले, कि बिलाशुभउ वोह सभ थे

هُمُ الظُّلْمَ وَأَطْعَىٰ ۖ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۖ فَغَشَّاهَا مَا عَشَّىٰ ۖ فَبِأَيِّ

बडी अंधेरवाले और भडे सरकश (५२) और उलट पलटकी जानेवाली बस्तिको गिरा दिया (५३) तो उस पर छाया जो झुण छाया (५४) तो अपनेरबकी

الذَّرْبِكَ تَتَمَارَىٰ ۖ هَذَا نَذِيرٌ مِنَ النَّذْرِ الْأُولَىٰ ۖ أَرَأَيْتَ الْآرِزِقَ ۖ

किन किन ने'मतोंमें भा व शुभासे शक कर सकता है (५५) यह इर सुनानेवाले हैं अगले इर सुनानेवालोंसे (५६) जल्द आ गई तेज आनेवाली (५७)

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝ أَفَلَيْسَ هَذَا الْحَدِيثُ لَكُمْ عَجَبُونَ ۝

नहीं है उसका अलाहके भिवाङ्ग कोई उटानेवाला (५८) तो क्या इस बातसे तुम लोग तअज्जुब करते हो ? (५८)

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۝ وَأَنْتُمْ سَاهُونَ ۝ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَعِبُدُوهُ ۝

और हंसते हो, और रोते नहीं (६०) और तुम भेलमें पडे हो (६१) तो सज्दा करो अल्लाहका, और पूजते रहो (६२)

سُورَةُ الْقَمَرِ ۝ ٥٣ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

सूरअे क्मर मक्किया

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ५५ रुकुअ ३

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ ۝ وَالنُّجُومُ الْقَائِمَةُ ۝ وَإِنْ يُرَوِّا أَيْ يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا

करीब पलहोंकी क्यामत, और शक हो गया यांठ (१) और अगर टप भी लें कोई निशानी, तो उगदानी ही करें, और केड हें

سِحْرٌ مُسْتَسِيرٌ ۝ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝ وَكُلُّ أُمَّةٍ مُسْتَقَرٌّ ۝ وَلَقَدْ

किजाद हें उमेशावाला (२) और जुटला दिया, और यले अपनी ज्वाहिशों पर, और हर काम अपने वक्त पर होनेवाला हें (३) और भेशक

جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمٌ بَالِغٌ ۝ فَمَا تَعْنِ السُّنُودُ

आंठ उनके पास कितनी भअरें, जिनमें तम्भीड थी (४) निहायत दरजेकी छिकमत, तो क्या करें उर सुनानेवाले (५)

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نَّكِرٍ ۝ خُسْفًا أَبْصَارُهُمْ

अभी मुंड करे रहो उनसे.. जिस दिन बुलायेगा बुलानेवाला, ना गवार शैकी तरफ (६) जुकाअे अपनी आंभोंको

يَخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۝ مُمْهِطِينَ إِلَىٰ

निकलेंगे कब्रोंसे, गोया वोड टेडी हें कैली छूठ (७) दौडते छूअे बुलाने

الدَّاعِ ۝ يَقُولُ الْكٰفِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ لُؤْلُؤٍ

वालेकी तरफ. कलेंगे काकिर लोग, कि यह दिन बडा दुश्वार हें (८) जुटलाया था उनसे पडले नूडकी कौमने,

فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا لَوْ فَجَّئُونَ ۝ وَارْدُ جَرٍ ۝ فَدَعَا رَبِّي أَنِّي مَغْلُوبٌ

तो जुटलाया उमारे बन्धोंको, और बोले कि पागल हें, और वोड नूड जिकके गअे (९) तो दुडाई ही अपने रहकी कि में मज्जूम हूं,

فَأَنْتَصِرُ ۝ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ

तो तू ही बटला ले (१०) तो भोल दिया उमने आस्मानके दरवाजोंको मूसला धार पानीसे (११) और फाड निकाले उमने जमीन

عَيُونًا فَاتَّقَى الْمَاءَ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدَرٍ ۝ وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْأَوَّارِ

में यश्मे, तो मिल गया सब पानी इस भिकदारमें, जो मुकदर था (१२) और सवार किया उमने नूडको तप्तों

التَّحْتَظِرِ ۝۳۱ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝۳۲ كَذَّبَتْ

की रौंटी घास (३१) और बेशक आसान फ़रमा दिया हमने कुरआनको याद करनेके लिये, तो है कोरि याद करनेवाला? (३२) जुटलाया लूत

قَوْمٍ لُوْطٍ بِالنُّذْرِ ۝۳۳ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ

की कौमने दर सुनानेवालोंको (३३) बेशक बेजा हमने उन पर पथराव वालेको, मगर लूतकी आल जिन्हें बचा लिया हमने

بِسَحْرِ ۝۳۴ نَعْمَ قِنَّ عِنْدَنَا كَذِّ لِكَ نُجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝۳۵ وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ

पिछली रात (३४) रडमत हमारी तरफसे. ठसी तरड पचाव देते हैं हम उसे जिसने शुक्र अदा किया (३५) और बिलाशुभड उन्होंने डराया

بَطَشْتَنَا فَنَمَارُوا بِالنُّذْرِ ۝۳۶ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِمْ فَطَسَّنَا

सबको हमारी पकडसे, फिर भी उन्होंने शक किया भतरनाक फ़रमानमें (३६) और बेशक उन लोगोंने किसलाया उन्हे मडमानोंके बारेमें,

أَعْيَنَهُمْ فَذَوْقُوا عَذَابِي وَنَذْرِي ۝۳۷ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ

तो हमने चौपट कर दी उनकी आंभें, कि अब यभो मेरा अजाब, और डरके अडकामको (३७) और बेशक सुभड तडके उन पर डडरनेवाला

مُسْتَقْرًا ۝۳۸ فَذَوْقُوا عَذَابِي وَنَذْرِي ۝۳۹ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ

अजाब आया (३८) कि अब यभो मेरा अजाब और डरके अडकामको (३९) और बेशक हमने आसान फ़रमा दिया कुरआनको याद करनेके लिये,

فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝۴۰ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝۴۱ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا

तो है कोरि याद करनेवाला? (४०) और बेशक आओ फिरओनियोंके पास दर सुनानेवाले (४१) उन्होंने जुटलाया हमारी सारी निशानियों

فَأَخَذْنَا مِنْهُمُ آخِذًا عَزِيزًا مُتَقَدِّرًا ۝۴۲ أَلْقَارُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أُولِيكُمْ أَمْ لَكُمْ

को, तो पकडा हमने उन लोगोंको, ठज्जतवाले कुदरतवालेकी पकड (४२) क्या तुम्हारे कुफ़कार बेडतर हैं ठन काकिरोंसे, या तुम्हारी

بِرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝۴۳ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُنْتَصِرُونَ ۝۴۴ سِيَاهُ الرِّجَمِ

मुआझी है किताभोंमें? (४३) आया यह केडते हैं कि हम सब मिल कर बडवा लेनेवाले हैं (४४) अभी अभी भगाठ ज़अगेगी

وَيُؤْتُونَ الدُّبُرَ ۝۴۵ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذْهَى وَأَمْرًا إِنَّ

जमठय्यत और पीठ डेर दिये ज़अगे (४५) बडके क्यामत भी उनकेवा'देका मकाम है, और क्यामत निछायत कडी और बेडड कडवी है (४६) बेशक

النَّجْمِ مِيمٍ فِي ضَلَالٍ وَسُعْرٍ ۝۴۶ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ

यड मुजरिम लोग डिमाकत व दीवानगीमें हैं ..(४७).. जिस दिन घसीटे ज़अगे आगमें अपने अपने मुंडके बल.

ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝۴۸ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝۴۹ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا

कि यभो डोज़ाभमें आनेको (४८) बेशक हमने डर याडेको पैदा फ़रमाया अन्दाजेसे (४९) और नही है हमारा काम, मगर

وَاحِدَةً كَلِمَةٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝

अेक बातकी बात, जैसे पलक मारना (५०) और बेशक बरबाद कर दिया हमने तुम लोगोके शयओको, तो है कोई सोचनेवाला ? (५१)

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌّ ۝

और हर काम जिसे उन्होंने किया नविशतोंमें है (५२) और हर छोटी बडी बिभी धूँई है (५३) बेशक अल्लाह

الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّتٍ وَنَهْرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صَدِّقٍ عِنْدَ فُلَيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

से डरनेवाले भागों और नहरमें हैं (५४) सख्याईकी बैठकमें, कुदरतवाले बादशाहके य हां (५५)

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ الرَّحْمٰنِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

सूरअे रहमान महनिथ्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ७८ रुकूअ ३

الرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝

महरबान अल्लाहने (१) सिपा दिया कुरआन (२) पैदा करमाया उस ईन्सानकी (३) और अता दिया उसे भोल कर (४)

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ۝ وَالسَّمَاءُ

सूरज और चांद हिसाबसे हैं (५) और बेलबूटे और दरभन सज्देमें पडे हैं (६) और आस्मानकी

رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ

उसने भुलन्ट करमाया और उसीने रभी तराजूकी (७) कि न घट बढ़ करो तोलमें (८) और काँठम रभो तोलकी

بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝ وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝ فِيهَا

ईन्साइसे, और न घटाओ वज़नकी (९) और ज़मीनकी उसने रभा मफ्लूकके बिचे (१०) जिस

فَاكِهِتٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ ۝ وَالرَّيْحَانُ

में मेवा है. और भजूर है गिलाइँ वली (११) और अनाज भूसेवाले, और भुशबूदार इल (१२)

فِي آيِ الْآلِ رَبِّكُمْ تَكْدِبِينَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝

तोऐजिन व ईन्स अपनेरभकी किन किन ने'मतोंको जुटलाओगे ? (१३) उसनेपैदा करमाया आम ईन्सानको, बनभनाती मिट्टीसेकीकरी की तरह (१४)

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ نَارٍ ۝ فَبِآيِ الْآلِ رَبِّكُمْ تَكْدِبِينَ رَبُّ

और उसने पैदा करमाया जिन्नातकी आगकी लपटसे (१५) तो तुम दोनों किन किन ने'मतोंको अपने रभकी जुटलाओगे ? (१६) दोनों

الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِآيِ الْآلِ رَبِّكُمْ تَكْدِبِينَ ۝

मशिरकका रभ, और दोनों मगरिबका रभ (१७) तो तुम दोनों अपने रभकी किन किन ने'मतोंको जुटलाओगे ? (१८) उसने

الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِينَ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِينَ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

बहाभे दो दरिया जो मिल जाते हैं (१८) तो उनके दरमियान रोक डे, डि बाडम यढ नडीं सकते (२०) तो तुम दोनों अपने रबकी किन

تُكذِّبِينَ ۝ يُخْرِجُ مِنْهُمَا الْمَوْءُودَ وَالْمَرْجَانَ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (२१) निकलता रडता डे ढन दोनोंसे मोती और मुंगा (२२) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन

الْبَحْرَيْنِ ۝ وَكَهَ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَادِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ

ने'मतोंको जुटवाओगे? (२३) और उसीकी डे यलनेवाली कश्तियां ठीथी ठीथी, दरियामें जेसे पडाड (२४) तो तुम दोनों अपने रबकी

رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو

किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (२५) डर अक जो ढस जमीन पर डे कना डोनेवाला डे (२६) और बाकी रडेगी तुमडारे रब जलाल व ढज्जलत

الْجَلِيلِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي

वालेकी जलत (२७) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (२८) मांगता रडता डे उससे डर आस्मान

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

वाला और जमीन वाला. डर दिन वोड अक शानमें डे (२८) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों

تُكذِّبِينَ ۝ سَنَفَعُكُمْ أَيُّ الْقَلْبِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝

को जुटवाओगे? (३०) जल्ल डी निबटा डेंगे डम तुमडें अे दोनों गिरोड (३१) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (३२)

يَعَشِرَ الْجَنِّ وَالْإِنْسِ إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَنْقَارِ

अे गिरोडे जिन व ढंस, अगर सकत डो तुममें, डि निकल जाओ किनारोंसे

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۝ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ ۝ فَبِأَيِّ

आस्मानों और जमीनके, तो निकल जाओ. न निकल सकोगे बेकुवत बन कर (३३) तो तुम दोनों अपने

الْآلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَاظِقٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا

रबकी किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (३४) छोडी जाअेगी तुम दोनों पर आग, भादिस लपट.. और काला धुवां, तो बढला

تَنْتَهَرْنَ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ

न ले सकोगे (३५) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (३६) तो जडां डट गया आस्मान, तो डो गया

فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ

गुलाबका डूल, जेसे लाल नरी (३७) तो तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतोंको जुटवाओगे? (३८) तो उस वकन

الْيَمِينَةِ ۝ وَأَصْحَابُ الشَّعْبَةِ ۝ مَا أَصْحَابُ الشَّعْبَةِ ۝ وَالسَّيْفُونَ

वालोंका (८) और भाअं छाथवावे. केसी शामत है भाअं छाथवालोंकी (९) और सबकत ले जानेवाले

السَّيْفُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الْمَقْرَبُونَ ۝ فِي جَدَّتِ التَّعْيِيمِ ۝ تِلْكَ مِّنَ

तो आगे भठ जानेवाले हैं (१०) वोही अल्लाहके नजदीकी हैं (११) राहतके भागोंमें (१२) अक जथ्था

الْأُولَىٰ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝ عَلَىٰ سُرِّ مَوْضُوعَةٍ ۝ مُّتَّكِنِينَ

अगलोंसे (१३) और कुछ पिछलोंसे (१४) जडाव तप्तों पर (१५) तकिया लगाअे

عَلَيْهَا مُتَّقِبِلِينَ ۝ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝ بِالْأَوَابِ

आमने सामने बैठे (१६) दौर यलाअंगे उन पर हमेशा रहनेवाले लडके (१७) कूअों

وَأَبَارِقُ ۝ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ لَا يُصَدَّ عَنَّا وَلَا

और आक़ताओं.. और भेडती दुई शराभसे भरे ज़ामका (१८) न दई सर दिये ज़अंगे उससे, और न भेडोश

يُزْفُونَ ۝ وَقَاكِهِتٍ مِّمَّا يَخَيَّرُونَ ۝ وَكِحِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

किये ज़अंगे (१९) और मेवा जिसे पसन्द करें (२०) और परिन्दका गोशत जिसे याहें (२१)

وَحَوْرٍ عَيْنٍ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और भडी भडी आंभवाली गोरियां (२२) जैसे मडकूअ पोशीदा मोतीकी मिषाल (२३) धवाभ उसका, ज़ो अमल करते थे (२४)

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِي مَأْثُورًا ۝ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝ وَأَصْحَابُ

न सुनेगे उसमें कोई शोर और न भेजा भात (२५) मगर यह बोली, कि "सलाम सलाम" (२६) और दाडिने छाथ

الْيَمِينِ ۝ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۝

वाले.. क्या केडना दाडिने छाथवालोंका (२७) कांटोंसे साक़ भेरियोंमें (२८) और केलेके भवदमें (२९)

وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ۝ وَمَاءٍ سَكُونٍ ۝ وَقَاكِهِتٍ كَثِيرَةٍ ۝ لَا مَقْطُوعَةٍ

और लम्भे लम्भे दवामी सायामें (३०) और यलते ही रहनेवाले पानीमें (३१) और बकधरत भेवेमें (३२) ज़ो कल्मी न भत्त भों,

وَلَا مَسْجُوعَةٍ ۝ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝ إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ۝ فَجَعَلْنَهُنَّ

और न रुकावटकी ज़अे (३३) और ऊये ऊये बिस्तरोंमें (३४) भेशक हमने बनाया ऊन दुूरोंको भुभ (३५) किर कर दिया ऊन्हें

أَجْرًا ۝ عَرَبًا أَعْرَابًا ۝ لَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ تِلْكَ مِّنَ الْأُولَىٰ ۝ وَ

क़वारियां (३६) यडीतियां हम ऊम (३७) दाडिने छाथवालोंके लिये (३८) अक जथ्था अगलोंसे हैं (३९) और

تُذَكِّرُ مِنَ الْأَخْرَيْنَ ۖ وَأَصْحَابُ الشَّمَالِ ۗ مَا أَصْحَابُ الشَّمَالِ ۖ فِي

अंक जथा पिछलोंसे (४०) और भाअें डायवाले.. केसी शामत हे भाअें डायवालोंकी (४१) जलती

سُومٍ وَحَمِيمٍ ۖ وَظِلٌّ مِّنْ يَّحْمُومٍ ۖ لَا بَارِدٌ وَلَا كَرِيمٌ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا

लू और भौलते पानीमें (४२) और काले धूअेंके सायामें (४३) न ढंडी, न भाईजगत (४४) भेशक यड लोग थे

قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۖ وَكَانُوا يُصْرَبُونَ عَلَى الْحَنِثِ الْعَظِيمِ ۖ

उसके पहले आसूदा डाल (४५) और र्छरार करते रहे भडे जूम पर (४६)

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۖ أَيُّدِنَا وَإِنَّا لَنَبْعَثُونَ

और कडा करते थे.. कि क्या जभ मर गअे और डो गअे भाक और डडियां, तो क्या डम उडअे जाअेंगे ? (४७)

أَوْ آبَاءَنَا وَالْأَوَّلِينَ ۖ وَالْآخِرِينَ ۖ لَجِبُوا عَٰلَمًا

और डमारे अगले भापडाडे (४८) केडडो के भेशक अगले और पिछले (४९) यकीनन र्छडडे किये जाअेंगे

إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيْهَا الضَّالُّونَ الْمُكذِّبُونَ ۖ

जानेभूडे डिनकी भीआड पर (५०) डिर भिलाशभड तुम लोग अे भेराडो लुटवानेवालो ! (५१)

لَا كُؤُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ رَّوْمٍ ۖ فَمَا كُؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۖ

यकीनन जानेवाले डो थूडडके डरभ्तसे (५२) तो डरनेवाले डो उसीसे अपने डेट (५३)

فَشْرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۖ فَشْرِبُونَ شَرْبَ الرَّهِيمِ ۖ هَذَا

डिर पीनेवाले डो उस पर भौलता पानी (५४) तो पीनेवाले डो प्यासे डींटीक तरड (५५) यड डे उन

نُزِّلَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۖ نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ

की डेडभानी, जजाके डिन (५६) डमने डैडा डरमाया तुभडें, तो तुम क्यूं नडीं तस्डीक करते (५७) तो जरा भताओ कि

مَا تَسْتُنُونَ ۖ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَ ۖ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۖ نَحْنُ قَدَرْنَا

जो मनी रडममें पडोंयाते डो (५८) क्या तुम लोग उसे डैडा करते डो, या डम डैडा डरमानेवाले डें (५९) डमने करार डे डिया

بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِسَبُّوقِينَ ۖ عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ

तुममें मरनेको, और नडीं डें डम पिछडे (६०) र्छस पर कि भडल डें तुम जैसे,

وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ

और भना डें तुभडें अैसी सूरतमें, जिनको तुम जानते डी नडीं (६१) और भेशक जान सुके डो तुम पहली उडानको,

فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٤٣﴾ ؕ أَنْتُمْ تَزْرَعُونَ ﴿٤٣﴾

तो क्यूँ नहीं सोचते (६२) जरा बताओ तो जो बोया करते हो (६३) क्या तुम भेती बनाते हो ? या हम

نَحْنُ الزَّرْعُونَ ﴿٤٣﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٤٤﴾

बनानेवाले हैं (६४) अगर हम चाहें तो यकीनन कर दें उसे रौंदी धुँई, तो रह जाओ भातें बनाते (६५)

إِنَّا لَمَعْرَمُونَ ﴿٤٤﴾ بَلْ نَحْنُ حَرَمٌ مُمُونٌ ﴿٤٥﴾ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي

कि भेशक हम तो तावानमें पड़ गये (६६) बल्कि हम तो महरूम ही रह गये (६७) तो जरा यह तो बताओ कि जो पानी

تَسْرُبُونَ ﴿٤٥﴾ ؕ أَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٤٥﴾

तुम लोग पीते हो (६८) क्या तुम लोगोंने भरसाया है उसे बादलसे, या हम भरसानेवाले हैं (६९)

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ أجاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي

अगर हम चाहें तो कर दें उसे तल्ह, तो क्यूँ नहीं शुक अदा करते हो (७०) जरा यह तो बताओ कि जिस आगको तुम

تُورُونَ ﴿٤٦﴾ ؕ أَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٤٧﴾ نَحْنُ

जलाते हो (७१) क्या तुम लोगोंने बनाया उसके दरभतको, या हम ही बनानेवाले हैं (७२) हमने बनाया

جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَرَمَقًا لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٤٨﴾

उसको यादगार, और कार आमद, मुसाफिरोंके लिये (७३) तो पाकी ओलो अपने अजमतवाले रभके नामकी (७४)

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْجِعِ النُّجُومِ ﴿٤٨﴾ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

नहींक्यामेंकसमयादकरताधूँथमकतोकेंउतरनेकीजगहकी? (७५) औरबिलाशुअडयकीनयहकसमअगरजानोतोबरीहै (७६) किबिलाशुअड

لَقُرْآنٍ كَرِيمٍ ﴿٤٩﴾ فِي كِتَابٍ مَكْنُونٍ ﴿٤٩﴾ لَا يَسُرُّ إِلَّا الْبَاطِرُونَ ﴿٥٠﴾

यह यकीनन कुरआन शरीफ है (७७) महङ्क नविशतेमें (७८) “न छूअें उसको, मगर बिल्कुल पाक” (७९)

تَنْزِيلٍ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٠﴾ أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ﴿٥١﴾

उतारना हुवा रब्बुल आलमीनकी तरफसे (८०) तो क्या उस बातसे तुम लोग सुस्ती भरतनेवाले हो (८१)

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٥١﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُقُومَ ﴿٥٢﴾

और बनाते हो अपनी रोजी, कि तुम जुटवाते रहते हो (८२) फिर क्यूँ न हो कि रूठ गले तक किसीके पछोंचे (८३)

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا

और तुम लोग उस वक्त देखा करते हो (८४) और हम तुमसे ज़्यादा करीब हैं उसके, लेकिन तुम नहीं

الواقعة ٥٦

تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَا إِنْ

देखते (८५) तो क्यूं नहीं होता, अगर हो तुम लोग पूछगछ न किये जानेवाले (८६) कि लौटा लाओ इस रूडको अगर

كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَ

सत्ये हो (८७) फिर अगर वोड मरनेवाला अल्लाहके नजदीकोंसे है (८८) तो राहत है और

رَيْحَانٌ ۗ وَجَدْتُمْ نَعِيمًا ﴿٨٩﴾ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾

हूँ है.. और राहतका भाग है (८९) और अगर दाहिने हाथ वालोंसे है (९०)

فَسَلِّمْ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ

तो अपना सलाम दो दाहिने हाथवालोंसे (९१) और अगर है

الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾ فَانزِلْ مِنْ حَيْثُ ۗ وَتَصَلِّيْةٌ جَبِيَّةٌ ﴿٩٣﴾

सुटलानेवालों बेराहोंसे (९२) तो महमानी है मौलते पानीसे (९३) और जोंक देना है जहनममें (९४)

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٤﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٥﴾

बेशक यही यकीनन, ठीक यकीनकी बात है (९५) तो पाकी बोवो अपने अजमतवाले रबके नामकी (९६)

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ ٥٤
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सूरअे उदीद मदनिय्या

नामसे अल्लाहके बडा महरभान बफ्शनेवाला

आयात २८ रुकूअ ४

سَبِّحْ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

पाकी बोवी अल्लाहकी सभने, जो कुछ आस्मानों और जमीनमें है. और वोही जबरदस्त हिकमतवाला है (१) उसी

مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يُّحْيِيْ وَيُمِيْتُ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

की शाही है आस्मानों और जमीनकी. जिलाता है और मारता है. और वोड हर याहे पर कुदरतवाला है

قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ

(२) वोही अक्व है और आभिर है, और जाहिर है और बातिन है. और वोड हर अेकका

شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فِيْ سِتَّةِ

जाननेवाला है (३) वोही है जिसने पैदा करमाया आस्मानों और जमीनको छ

اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلٰى الْعَرْشِ طِيْعًا فَاِيْلَبِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا

दिनमें, फिर मुतवज्जेड हुवा अर्श पर. वोड जानता है जो कुछ दाभिल हो जमीनमें, और जो

يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ

कुछ निकले उससे, और जो कुछ नाज़िल हो आस्मानसे, और जो कुछ चढ़े उसमें. और वोह तुम लोगोंके

أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾ لَكَ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَ

साथ है जहां रहो. और अल्लाह जो कुछ तुम करो निगरां है (४) उसीकी शाही है आस्मानों और

الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ

जमीनकी. और अल्लाह हीकी तरफ़ लौटाये जायेंगे सारे काम (५) समो देता है रातको दिनमें, और

يُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾ آمِنُوا بِاللَّهِ

समो देता है दिनको रातमें. और वोह जाननेवाला है सीनोंकी बातको (६) मान जाओ अल्लाह

وَرَسُولِهِ وَالنَّفَقَاءُ مِمَّا جَعَلَكُمْ مُتَخَلِّفِينَ فِيهِ ﴿٧﴾ فَالَّذِينَ آمَنُوا

और उसके रसूलकी, और भय करो उस मालसे, कि कर दिया तुम्हें जिसमें जानशीन. तो जो लोग ईमान लाये तुममें

مِنْكُمْ وَالنَّفَقَاءُ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨﴾ وَمَالِكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَ

से, और भय भैरात किया, उन्हींके लिये बड़ा पचाब है (७) और क्या है तुम्हें कि न मानो अल्लाहको.

الرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

हालांकि रसूल बुलाये तुम्हें ताकि मान जाओ अपने रबको. और भेशक वोह भी ले चुका है तुम्हारे मजबूत अहदको अगर

مُؤْمِنِينَ ﴿٩﴾ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُم

ईमानवाले हो (९) वोही है जो उतारता है अपने भन्दे पर शैशन आयतें, ताकि निकाल

مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾ وَمَالِكُمْ

है तुम्हें अंधेरियोंसे उजालेकी तरफ़. और भेशक अल्लाह तुम पर यकीनन महरबान रहमवाला है (१०) और क्या है

أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ﴿١١﴾

तुम्हें कि न भय करो अल्लाहकी राहमें, और अल्लाह हीकी है विराधत आस्मानों और जमीनकी.

لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ أَوْلِيَاكَ

नहीं बराबर है तुममेंसे वोह, जिसने भय भैरात किया इन्हे मक्कासे पहले, और जिहाद किया. वोह लोग बहुत

أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتِهَا وَكُلًّا

बड़े हैं दरजेमें, इन लोगोंसे जिन्होंने भय भैरात किया बादमें, और जिहाद किया. और हर अेकसे

وَعَدَ اللَّهُ الْحَسَنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝۱۰ مَنْ ذَا الَّذِي

वा'दा करमाया अल्लाहने अस्थे धरका. और अल्लाह हर चीजसे जो करते हो बापबर है (१०) कौन है जो

يُقْرِضُ اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعُّهُ لَكَ وَلَكَ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝۱۱ يَوْمَ تَكْرَىٰ

दे अल्लाहको कर्ज उसना, कि दूना करमा दे उसके लिये उसको, और उसीके लिये बाँठलत पवाब है (११) जिस दिन तुम देभो

الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ

गे ईमानवाले मर्दों और औरतोंको, कि दौड रहा है उनका नूर, उनके सामने, और दाहिने,

بُشْرِكُمْ الْيَوْمَ جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۝

पुशपभरी हो तुम्हें आजके दिन, वोड बाग हें भेडती हें जिनके नीचे नहरें, डमेशा रहनेवाले उसमें.

ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝۱२ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ

यही भडी कामियाबी है (१२) जिस दिन कहेंगे मुनाफिक मर्द और औरतें,

لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْظَرُونَآ نَقَتَسْ مِنْ تَوْرِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ

उन्हें जो ईमान ला चुके थे कि हम पर ली निगाह कर दो, कि हम ली लेवें तुम्हारी रौशनीसे कुछ. जवाब दिया गया कि वापस जाओ अपने

فَاتَسُوا نَوْرًا فَضْرِبَ بَيْنَهُمْ سُوْرًا لَبَابٌ بَاطِنٌ فَيَدُ الرَّحْمَةِ

पीछे, तो वहां तलाश करो रौशनीको. फिर भडी कर दी गઈ फरीकैनेके दरमियान अक दीवार. जिसका अक दरवाजा है, कि उसके अन्दर

وظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝۱३ يُبَادُونَهُمْ أَنَّمْ تَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا

रडमत है, और उसके बाहरकी सभ्त अजाब है (१३) वोड पुकारेंगे उन्हें कि क्या हम न थे तुम्हारे साथ, उन्होंने जवाब दिया

بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّبْتُمْ

कि थे क्यूं नहीं, लेकिन तुमने भुट कितनेमें डाल दिया अपने लीको, और ताकमें लगे रहते थे, और शक किया करते थे, और धोका दिया था तुमको

الْأَمْثَانِي حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝۱४ قَالِیَوْمَ لَا

तुम्हारी जूटी उम्मीदोंने, यहाँ तक कि आ पछोंया अल्लाहका डुकम, और फरेब दे रभा था तुम्हें अल्लाहके साथ ईस भडे दगाभाज शैतानने (१४)

يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوِيكُمْ النَّارُ

अब आजके दिन न लिया जायेगा तुमसे कोई माली मुआवजा, और न उनसे जो भुले काफिर थे. तुम्हारा ठिकाना आग है.

هِيَ مَوْلَاكُمْ ۝ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝۱५ أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ

वोड आग ही तुम्हारी साथी है. और क्या भुरा फिरनेका ठिकाना है (१५) क्या वोड वक्त नहीं आया उनके लिये जो ईमान ला चुके, कि

تَخَشَعَةً قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا

जुक्त जायें उनके दिल अल्लाहकी यादके लिये, और जो कुछ नाजिल हुआ उसके लिये. और न हों उनकी

كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ

तरह कि जो दिये गये किताब पढले, तो दराज हूँ उन पर मुदत, तो सप्त हो गये

قُلُوبُهُمْ ۗ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿١٤﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحَى

उनके दिल. और उनके बोधतेरे नाकरमान हैं (१६) जान रभो कि बिलाशुभ अल्लाह, जिंदा

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥﴾

करमाता है जमीनको उसके मरनेके बाद. बेशक बयान करमा दिया हमने तुम्हारे लिये निशानियोंको, कि अकलसे कामलो (१७)

إِنَّ الْمَصْدِقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا

बेशक सदका देनेवाले मर्द और औरतें, और जिन्होंने कर्ज दिया अल्लाहको कर्ज उसना,

يُضَعْفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ

हूना किया जायेगा उनके लिये, और उन्हीके लिये बाँठजगत धवाब है (१८) और जो मान गये अल्लाह और उसके रसूलोंको,

أُولَئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۗ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ

वोही हैं सिदीक. और शहीद अपने रभके नजदीक. उन्हीके लिये उनका धवाब है,

وَأُولَئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۗ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ

और उनका नूर है. और जिन्होंने ठन्कार कर दिया और जुटवाया हमारी आयतोंको, वोह जहन्नमवाले हैं (१९)

اَعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَ

जान रभो कि दुन्यावी जिन्दगी, बस खेलकूद है, और सिंगार है, और बाहम एतराना है, और

تَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ آتَيْتُ الْكُفَّارَ

बढनेकी उवस है माल व औलादमें. जैसे अन्नकी मिषाल, कि अरखण लगा कशतकारोंकी

نَبَاتٍ ثُمَّ يَهَيِّجُ فَتْرَةً مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي

उसका उगना, फिर सूष जाती है, तो दम्भोगे उसे जर्द. फिर हो जाती है रौंदी यूर यूर. और

الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۗ وَ

आभिरतमें सप्त अजाब है. और अल्लाहकी तरफसे मग्फिरत है और रजामन्दी है. और

مَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعٌ الْعُرُورُ ۲۰ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّنَ

نہیٰ ہے دنیاوی زندگی مگر ذہنی پڑھ (۲۰) بڑھ چلو اپنے ربکی مغفرت

رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ

اور جنتکی तरफ, जिसकी चौड़ाई है जैसे आस्मान व زمینکی चौड़ाई. मुहय्याकी गर्ह है

آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ

उनके लिये जो मान चुके अल्लाह और उसके रसूलोंको. यह अल्लाहका इज़्जल है, हे उसे जिसे चाहे. और अल्लाह

ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۚ مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ

बडे इज़्जलवाला है (२१) नहीं पडोयी कोठ मुसीबत जमीनमें,

وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلُ أَنْ تَبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ

और न भुद तुम लोगोंमें, मगर यह कि वोड अक नविशतेमें है, कबल इसके कि हम पैदा करें उसे. बेशक यह

عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ لَّكِنَّا لَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا

अल्लाहको आसान है (२२) ताकि गमगीन न हो इस पर, जो जाता रहा तुमसे, और न मयलो, इस पर जो

آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۚ الَّذِينَ يَبْجُلُونَ وَيَأْمُرُونَ

हे दिया तुमको. और अल्लाह नहीं पसन्द करमाता किसी एतरे बडाई हांकनेवालेको (२३) जो भुद कन्जूसी करें, और भशवरा दें

النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ

लोगोंको कन्जूसीका. और जो उगदानी करे, तो भिलाशुभ अल्लाह ही बेनियाज उम्दवाला है (२४)

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ

बेशक भेजा हमने अपने रसूलोंको रीशन दलीलोंके साथ, और उतारा उनके साथ किताब और एन्साइका तराजू,

لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ

ताकि काठम हो जायें लोग एन्साइ पर. और उतारा हमने लोहा, जिसमें सप्त उरज भी है,

وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ

और फ़ाएदे भी हैं लोगोंको, और ताकि एल्म कराहे अल्लाह, कि कौन मदद करता है उसके लिये उसके रसूलोंकी बेदोषे.

إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا

बेशक अल्लाह कुव्वतवाला जबरदस्त है (२५) और बेशक भेजा हमने नूह व एब्राहीमको, और कर दिया हमने

فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النَّبُوَّةَ وَالكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُهْتَبٍ وَكَثِيرٌ

उन दोनोंकी नस्लमें नुबुव्वत और किताबको, तो उनके कुछ राह पाये हूँ। और ओहतेरे उनके

مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٣٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا

नाकरमान हूँ (२६) फिर पीछे लगा दिया हमने उनकी राहों पर अपने और रसूल, और उनके पीछे भेजा

بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي

ईसा ईसने मरयमको, और दी उन्हें इन्जिल... और कर दिया हमने उनके

قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً وَّرَاحِمَةً ط وَرَاهِبَانِيَّةً ۗ

दिलोंमें, जिन्होंने ताबेअदारीकी उनकी, महरबानी और रहमत. और राहिल बनना,

ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَا عَلَيْهَا إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ

यह उन्होंने पुढ बिदअत निकावी थी, हमने नहीं लिखा था उन पर, मगर अल्लाहकी भुशनूदी याहनेकी नियतसे, फिर

فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۗ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۗ

नहीं निबाह सके उसे, जो निबाहका हक है. तो दिया हमने उन्हें जो मान युके थे उनमेंसे, उनका पवाब.

وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٣٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ

और ओहतेरे उनके नाकरमान थे (२८) ओ ईमानवालो ! उरो अल्लाहको

وَأْمِنُوا بِرَسُولِهِ يُوْتِكُمْ كَفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ

और मान ही जाओ उसके रसूलको, देगा तुम्हें दो हिस्से अपनी रहमतसे, और कर देगा तुम्हारे

نُورًا تَتَسَوَّنَ بِهِ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٨﴾

लिये ओक नूर, यलोगे जिसमें, और भग्श देगा तुम्हें. और अल्लाह गफूर रहीम है (२८)

لَعَلَّ يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ الْآيِقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّنْ

ताकि न रह जायें अहले किताब भेभबर उससे, कि वोह नहीं कुदरत रभते कुछ भी

فَضْلِ اللَّهِ وَآتَ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ط

अल्लाहके इज़ल पर, और भेशक इज़ल अल्लाहके हाथमें है, दे उसे जिसे याहे.

وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٩﴾

और अल्लाह बडे इज़लवाला है (२८)